ममेरी बहन की मृत्यु ने दीनदयाल जी को बुरी तरह विचलित कर दिया। वे दुःख और षोक में डूब गए। मामा राधारमण जी उनकी प्रतिभा को नश्ट होते नहीं देख सकते थे।
''तुम भारतीय प्रषासनिक सेवा की परीक्षा की तैयारी करो। मुझे विष्वास है कि पुनः पढ़ाई की ओर ध्यान देने से तुम्हारा दुःख कुछ कम हो जाएगा।
उन्होंने पूरा ध्यान केवल पढ़ाई पर केंद्रित कर लिया। न खाने की सुध न पहनने की। रात दिन किताबों के बीच गुजरने लगे।